www.praja.org Prajafoundation praja.org

जवाबदेह शासन को सक्षम करना यह प्रजा संस्था का उद्देश्य है।

इस अंक में पढ़िए

दिल्ली में पुलिस और कानून एवं व्यवस्था की स्थिति

PRAJA DIALOGUE

Jan-Mar 2017 Issue 5

व्यक्तिगत वितरण हेतु

खास बात

दिल्ली में पुलिस व्यवस्था की जिम्मेदारी केंद्र सरकार पर है. इस सरकारने ने राज्य सरकार के साथ साथ नागरिकों की रक्षा के लिए कई कदम उठाने के वादें तो किये, जैसे, महिलाओं को रास्तों पर सुरक्षित महसूस कराने के लिए सड़कों पर पर्याप्त रोशनी, सार्वजनिक परिवहन सेवाओं की बेहतर संभव कनेक्टिविटी इत्यादि, लेकिन उन्हें पूरा नहीं किया। इस वजहसे दिल्ली में कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ चुकी है; आज के हालात एसे हैं कि हर दिन 6 बलात्कार, 2 हत्या और 215 चोरी और डकैती की घटनाएं हो रही है। हमारा घरेलू सर्वेक्षण, जिसमें हमने लगभग 29,950 परिवारों से जानकारी ली, दर्शाता है की सुरक्षा के मामलों में सरकार से लोगों का विश्वास उठ रहा है। 60% दिल्लीवासी शहर में खुदको सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं, 67% लोगों का मानना है की उनने इलाके में महिला, बच्चे और वरिष्ठ नागरिक सुरक्षित नहीं है, और 64% लोगों को शहर में यातायात करते हुए सुरक्षित नहीं लगता। सबसे चौंकाने वाली बात है कि जिन लोगों को अपराध का सामना करना पड़ा है उनमें से 25% लोगों ने, पुलिस और कानूनी व्यवस्था में विश्वास न होने के कारण, पुलिस को सूचित नहीं किया है।

मामलों को सुधारने में दिल्ली के सांसदों का व्यवहार निराशानजक रहा है, और सिफारिश की गयी राज्य सुरक्षा आयोग (एसएससी) का गठन भी अबतक नही किया गया है।

ऐसाही कबतक चलता रहेगा? सरकार कब जरूरत के अनुसार कदम उठाएगी? पोलिस सुधार पर सर्वोच्च न्यायालय की सिफारिशों को लंबे समय से लागू करना था, जिसके लिए हमें इस सरकार पर दबाव डालना चाहिए। हमें यह भी देखने की जरूरत है की हमारे निर्वाचित प्रतिनिधी कानून और सुरक्षा व्यवस्था के मुद्दों पर सक्रिय होकर निरंतर रुचि लेकर कम करे। जब तक ये बातें नही होती है, तबतक दिल्ली में कानूनी अमल और सुरक्षा के हालात और बिगड़ते जायेंगे।

विशेषताएं

- एक दिन में 6 बलात्कार, 2 हत्या और 215 चोरी और डकैती की घटनाएं होती है।
- 60% दिल्लीवासी शहर में असुरक्षित महसूस करते हैं।
- अपने इलाके में महिला, बच्चे और वरिष्ठ नागरिक सुरक्षित नहीं है, ऐसा 67% लोगों का मानना है।
- पूर्वोत्तर दिल्ली से महिला छेड़छाड़ की उच्चतम घटनाएं सूचित (743) हुई है।
- मानसून 2015 से बजट 2016 के संसद के सत्रों के दौरान अपराध के मुद्दों पर सांसदों द्वारा केवल 10 प्रश्न पूछे गये।

तालिका 1: दिल्ली में रिपोर्ट किए अपराध

रिपोर्ट किए विशिष्ट अपराध	2014	2015	2014 से 2015 तक बढ़त %
हत्या (अनु. 302)	554	640	16%
हत्या का प्रयास (अनु. 307)	757	835	10%
बलात्कारी (अनु. 376)	2075	2338	13%
छेड़छाड़ (अनु. 354, 354 अ, ब, क, ड)	4717	4347	-8%
दंगा (अनु. 147-151, 153 अ)	153	179	17%
अपहरण (अनु. 363-369, 364 अ)	7187	7940	10%
चोरी / डकैत (दिन और रात में) (अनु. 454, 457)	10282	13577	32%
चेन खींचना (अनु. 356)	7170	4729	-34%
लूटपाट / डकैत (अनु. 392-395, 397, 398)	6470	8607	33%
दुर्घटना / घातक दुर्घटना (अनु. 279 और साथ में 337, 338 या 304 अ)	8277	8637	4%
चोरी (अनु. 379 से 381)	51860	56192	8%
जबरन वसूली / फिरौती (अनु. 384-389)	236	285	21%

2014 से 2015 के दरम्यान बलात्कार के अपराध 13% बढ़ गये हैं, जबकि छेड़छाड़ के अपराध 8% घटे हैं। पिछले एक साल में हत्या और दंगों के अपराध क्रमानुसार 16% और 17% बढ़े हैं। लूटपाट / डकैत के अपराध 33% से बढ़े हैं।

ग्राफ 1: उच्चतम सूचित अपराध संख्या - जिलेवार

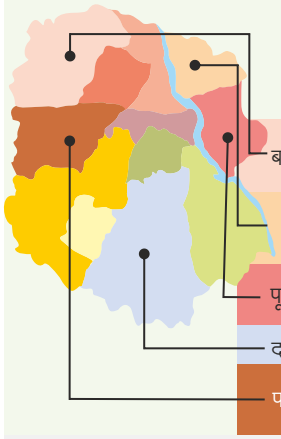

	अपहरण	दुर्घटना / घातक दुर्घटना	हत्या	बलात्कार	फिरौती	चोरी	लूटपाट	दंगा	छेड़छाड़	लूटपाट / डकैत	हत्या का प्रयास	चेन खींचना
बाहरी जिला	2014: 1206 2015: 1338	2014: 1083 2015: 1170	2014: 87 2015: 126	2014: 269 2015: 370	2014: 64	2014: 7396 2015: 9362	2014: 1818 2015: 2535	2014: 30 2015: 62	2015: 743	2014: 1287 2015: 2006	2014: 111 2015: 152	2015: 1719
पूर्वोत्तर जिला					2014: 38				2014: 862			2015: 1279
पूर्व जिला												
दक्षिण जिला												
पश्चिम जिला												

2015 में सबसे ज्यादा बलात्कार (370), हत्या (126), हत्या का प्रयास (152) और अपहरण (1338) के अपराध पूर्वोत्तर दिल्ली में हुए हैं। 2015 में सबसे ज्यादा छेड़छाड़ के अपराध (743) भी पूर्वोत्तर जिलों में हुए है, जब कि 2014 में सबसे ज्यादा (862) दक्षिण जिलों में हुए थे। 2015 में दिल्ली में चोरी के सबसे अधिक (56,192) अपराध के मामले दर्ज हुए।

सर्वेक्षण के आंकडों से - दिल्ली में असुरक्षितता महसूस करनेवाले लोग

- दक्षिण दिल्ली के 69% निवासी असुरक्षित महसूस करते हैं।
- 60% दिल्लीवासी सुरक्षा के बारे में चिंतित हैं, जबकि मुंबई में यह संख्या 29% ही है।
- अपने इलाके में महिला, बच्चे और वरिष्ठ नागरिक सुरक्षित नहीं हैं, ऐसा 67% दिल्ली के लोगों का मानना है जबकि मुंबई में केवल 33% लोगों के लिए यह चिंता का विषय है।
- 64% दिल्लीवासी यातायात करते हुए असुरक्षित महसूस करते हैं, जबकि मुंबई में इसका अनुपात 31% है।
- केवल 29% दिल्लीवासी पुलिस व्यवस्था से संतुष्ट हैं, जबकि मुंबई में इसका अनुपात 64% है।
- दिल्ली में 26% उत्तरदाताओं का पुलिस पर भरोसा नहीं है, जबकि मुंबई में इसका अनुपात 13% हैं।

तालिका 2: पद के अनुसार पुलिस कर्मियों की मंजूर संख्या और प्रत्यक्ष रूपसे काम करनेवालों की संख्या (मार्च 2016 तक)

पद				
पुलिस आयुक्त (C.P.)	1	1	0	0%
विशेष पुलिस आयुक्त	10	13	3	30%
संयुक्त / सहपुलिस आयुक्त (Jt. C.P.)	20	21	1	5%
अपर पुलिस आयुक्त (Addl. C.P.)	19	8	-11	-58%
पुलिस उपायुक्त (D.C.P.)	53	49	-4	-8%
अपर पुलिस उपायुक्त (Addl. C.P.)	54	29	-25	-46%
पुलिस सह आयुक्त (A.C.P.)	348	270	-78	-22%
पुलिस निरीक्षक (P.I.)	1350	1323	-27	-2%
पुलिस उप निरीक्षक (P.S.I.)	6111	5587	-524	-9%
सहायक पुलिस उप निरीक्षक (A.S.I)	6752	6707	-45	-1%
हेड कांस्टेबल (H.C.)	20841	18971	-1870	-9%
पुलिस कांस्टेबल (P.C.)	46819	43258	-3561	-8%
कुल पुलिस बल	82378	76237	-6141	-7%

मंजूर

मार्च 2016 में काम करनेवालों की संख्या

मंजूर और प्रत्यक्ष रूपसे काम करनेवालों की संख्या में अंतर (मार्च 2016)

% मंजूर और प्रत्यक्ष रूपसे काम करनेवालों की संख्या में अंतर

मंजूर और प्रत्यक्ष रूप से कम करनेवालों की संख्या में विशेष पुलिस आयुक्त 30% और संयुक्त पुलिस आयुक्त 5% से बढ़े हैं। इसके अलावा अन्य सभी पदों पर मंजूर संख्या से कम संख्या में पुलिसकर्मी काम कर रहे हैं, जैसे अपर सीपी के पदों पर 58% कम कर्मचारी, पुलिस उप निरीक्षक (पीएसआई) पदों पर 9% कम कर्मचारी हैं। कुल मिलाकर दिल्ली में वर्तमान पुलिस बल में 7% कर्मियों की कमी है।

तालिका 3: बजेट सत्र 2014 से बजेट सत्र 2016 तक अपराध के मुद्दों पर सांसद में उठाए सवालों की संख्या

सांसदियों के नाम	अपराध के मुद्दों पर उठाए सवालों की संख्या		कुल सवाल	
	बजेट सत्र 2014 से बजेट सत्र 2015	मानसून सत्र 2015 से बजेट सत्र 2016	बजेट सत्र 2014 से बजेट सत्र 2015	मानसून सत्र 2015 से बजेट सत्र 2016
मीनाक्षी लेखी	1	2	105	101
महेश गिरी	4	4	127	109
मनोज तिवारी	0	0	5	20
परवेश साहिब सिंग	1	0	29	18
रमेश बिधुरी	0	1	22	47
उदित राज	3	3	42	78
कुल	9	10	330	373

यह तालिका में बजेट सत्र 2014 से बजेट सत्र 2015 तक और मानसून सत्र 2015 से बजेट सत्र 2016 तक की अवधी में सांसदियों ने अपराध और पुलिसकर्मी, आधारिक संरचना इन मुद्दों पर सांसद में पूछें गये सवालों की संख्या दी है। इन सांसदीय सत्रों में महेश गिरी ने सबसे ज्यादा (4) सवाल पूछें है, जबकि मनोज तिवारी ने एक भी सवाल नहीं पूंछा है।

बजेट सत्र 2014 से बजेट सत्र 2015 तक पूंछे गये कुल सवालों की संख्या 330 है, जिसमें सिर्फ 9 सवाल अपराध के मुद्देपर है। मानसून सत्र 2015 से बजेट सत्र 2016 तक पूंछे गये कुल सवालों की संख्या 373 है, जिसमें सिर्फ 10 सवाल अपराध के मुद्देपर है।

खबरों मे प्रजा

WWW.INDIANEXPRESS.COM
THE INDIAN EXPRESS, THURSDAY, NOVEMBER 24, 2016

3

60% of people don't feel safe in capital, says survey

EXPRESS NEWS SERVICE

FIGURING THE CITY

When police face the heat

02 The Statesman

67% DELHI'ITES FEEL UNSAFE IN CITY: REPORT

PRAJA FOUNDATION FINDINGS REVEAL WOMEN, CHILDREN AND SENIOR CITIZENS ARE THE MOST VULNERABLE

'13% rise in rape cases'

हिन्दुस्तान • गुरुवार • 24 नवंबर 2016 03

गैर सरकारी संगठन प्रजा फाउंडेशन के सर्वे में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए, 60 फीसदी आबादी खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती

राजधानी में रोजाना छह दुष्कर्म और दो कत्ल होते हैं

रिपोर्ट

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

हैरान करते आंकड़े

40%

2338

2075

8067

30

67%

64%

25%

पुलिस के कामकाज के तरीकों पर सवाल उठाए

ग्राफ 2: दिल्ली में असुरक्षितता महसूस करनेवाले लोग

60%	दिल्लीवासी सुरक्षा के बारे में चिंतित हैं
64%	दिल्लीवासी यातायात करते हुए असुरक्षित महसूस करते हैं
67%	लोग महिला, बच्चे और वरिष्ठ नागरिक को सुरक्षित नहीं समजते हैं

60 फीसदी दिल्ली वाले महसूस करते हैं असुरक्षित

2014 में बलात्कार के दर्ज कराए गए कुल मामले थे 2075

2015 में, दर्ज कराए गए बलात्कार के मामले 2338 हो गए

2015 में, छेड़खानी के दर्ज कराए गए मामलों की संख्या 13,577

लूट और डकैती की दर्ज कराई शिकायतों की संख्या 8067 थी

पुलिस सुधार पर स्थिति

सर्वोच्च न्यायालय ने 22 सितम्बर 2006 में राज्य सुरक्षा आयोग (एसएससी) गठित करने का आदेश दिया था, लेकिन पिछले दस सालों में और दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार आने से अब तक इसपर कोई अमल नहीं हुआ है।

क्या करना चाहिए ...

- सर्वोच्च न्यायालय की शिफरासों का कार्यान्वयन हो।
- राज्य सुरक्षा आयोग का गठन होना चाहिए।
- पुलिस शिकायत प्राधिकरण के माध्यम से नियमों का कड़ाई से अनुपालन लागू करना चाहिए।
- जांच और कानून एवं व्यवस्था अलग करने की जरूरत।
- निरंतर प्रशिक्षण, फोरेंसिक प्रयोगशालाओं, अपराध मानचित्रण और अपराध की भविष्यवाणी के लिए बुनियादी ढांचों को मजबूत बनाना और जहां आवश्यक हो तैयार चाहिए।
- सभी हितधारकों, जैसे की बच्चे, माता-पिता, स्कूल और कॉलेज, के साथ बच्चों के यौन शोषण के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाए।
- निर्वाचित प्रतिनिधियों को सुरक्षा के मुद्दों पर अधिक सक्रिय रूप में काम करने की जरूरत है; उन्हें सरकार से कानून एवं व्यवस्था और सुरक्षा पर सवाल करनें चाहिए और पुलिस उनकी सुरक्षा के लिए है यह विश्वास नागरिकों के बीच निर्माण करना चाहिए।
- नागरिकों के मन में पुलिस की छवि को सुधारने के लिए समुदाय आधारित संगठनों और आरडब्ल्यूए (रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन) जैसे नागरिक समूहों और पुलिस के बीच विश्वास निर्माण गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए।

अगला अंक - दिल्ली के सार्वजनिक शिक्षा की स्थिति - जरूर पढ़िये।

To

Praja Foundation
Mumbai HO : Victoria Building, 1st Floor, Agiary Lane, Off Mint Road, Fort, Mumbai 400001, Tel.: +91-022-65252729
Delhi : 901, 9th Floor, Nirmal Tower, 26 Barakhamba Road, New Delhi 110001, Tel.:011-23321559
Web: www.praja.org **Email:** info@praja.org

PRAJA.ORG MAKING DEMOCRACY WORK

प्रजा फाउंडेशन को सहयोग करने के लिए "प्रजा फाउंडेशन" के नाम पर एक चेक लिखके और आपके नाम, ईमेल आईडी तथा संपर्क विवरण के साथ दिए गए पते पर पोस्ट कर। जिससे हम नियमित रूप से वार्ता भेज सके तथा आपका 80 जी प्रमाण पत्र भी भेज सके।

सहयोग द्वारा

European Union
dasra
Friedrich Naumann STIFTUNG FÜR DIE FREIHEIT
Narotam Sekhsaria Foundation
TATA TRUSTS
SIR DORABJI TATA TRUST • SIR RATAN TATA TRUST
JAMSETJI TATA TRUST • N.R. TATA TRUST • J.R.D. TATA TRUST

AGN 9881231865